आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

व्यक्तित्व आधुनिक मनोवैज्ञानिकों का बहुत ही महत्वपूर्ण एवं प्रमुख विषय है। सामान्यतः व्यक्तित्व से अभिप्राय व्यक्ति के रूप, रंग, कद, लम्बाई चौड़ाई, मोटाई अर्थात् शारीरिक संरचना तथा उसके व्यवहार से लगाया जाता है। व्यक्तित्व के संबंध में अनेक धारणाएं हैं। बोलचाल की भाषा में व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग शारीरिक बनावट और सौन्दर्य से लिया जाता है। शारीरिक सुन्दरता के आधार पर प्रायः कहा जाता है कि इस मनुष्य का व्यक्तित्व सुन्दर, आकर्षक और प्रभावशाली है। बोलचाल की भाषा में व्यक्तित्व का प्रयोग शारीरिक बनावट और सौन्दर्य से लिया जाता है। आज के युग में व्यक्तित्व की बहुत चर्चा है। अपने व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने के लिए व्यक्ति विविध उपाय करता है। किन्तु उसके अधिकांश प्रयास बाह्य व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने के लिए होते हैं। आन्तरिक व्यक्तित्व के अभाव में बाह्य व्यक्तित्व बहुत ज्यादा प्रभावित नहीं हो पाता। अतः आवश्यक है कि बाह्य व्यक्तित्व के साथ–साथ आन्तरिक व्यक्तित्व पर भी ध्यान दिया जाये। आन्तरिक व्यक्तित्व से तात्पर्य है आध्यात्मिक व्यक्तित्व। जिस व्यक्ति का आध्यात्मिक व्यक्तित्व जागृत हो जाता है उसे जीवन के सुख–दुःख, राग–द्वेष प्रभावित नहीं कर सकते। आन्तरिक व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया हैं– योग। योग आत्म–साक्षात्कार की प्रक्रिया है। आज योग को दैनिक जीवन में समाविष्ट करने का प्रयत्न किया जा रहा है, जिससे व्यक्ति तनावमुक्त, व्याधिमुक्त, कष्टमुक्त, स्वस्थ, संतुष्ट और श्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण कर सके। किसी व्यक्ति विशेष को जानने के लिए उसके व्यक्तित्व की समग्रता जाननी जरूरी है। कोई दो व्यक्ति एक जैसे नहीं होते। व्यक्तित्व व्यक्ति की मात्र अभिव्यक्ति नहीं है, एक समग्र प्रक्रिया है। उपनिषद काल के दार्शनिकों ने अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय पुरुष के रूप में आत्मा के उर्ध्वारोहण का क्रम दिया है। वैज्ञानिक दृष्टि से जीवन का प्रारंभ माता के डिम्ब और पिता के शुक्राणु के संयोग से होता है। व्यक्ति के आनुवंशिक गुणों का निश्चय क्रोमोसोम द्वारा होता है। क्रोमोसोम अनेक जींस का समुच्चय है। ये जींस ही माता–पिता के आनुवंशिक गुणों के संवाहक हैं। इन्हीं में व्यक्ति की शारीरिक व मानसिक क्षमताएं सन्निहित होती हैं। ऐसी कोई भी क्षमता प्रकट नहीं हो सकती है जो जींस में न हो। विज्ञान व्यक्तित्व की व्याख्या का मानक मनुष्य को चुनता है, क्योंकि मनुष्य ही वह विवेकशील प्राणी है जो अपना एवं दूसरों का अच्छा–बुरा सोच सकता है, गलत–सही का निर्णय कर सकता है, ह्रास–विकास के क्षणों में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण रख सकता है। वह संघर्ष, द्वन्द्व के क्षणों में समायोजन का सामर्थ्य भी रखता है। इसलिए व्यक्तित्व में सारी चर्चा व्यक्ति और चरित्र से जुड़ी है। उसके विघटन और संघटन के कारकों की खोज

भी की गई है। व्यक्तित्व को जानने और अच्छा बनाने की रूचि हजारों वर्षों से जनमानस में रही है। वर्तमान युग में आधुनिक वैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से अध्ययन किया है। जन–साधारण में व्यक्तित्व का अर्थ जहां व्यक्ति के बाह्य और व्यक्त रूप में लिया जाता है, वहीं विज्ञान में व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के आंतरिक ओर बाह्य दोनों गुणों से लिया जाता है। व्यक्ति का विकास एक सतत प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया जन्म से लेकर जीवन पर्यन्त चलती रहती है। व्यक्तित्व के स्वरूप पर आनुवांशिक कारकों का प्रभाव पड़ता है अतः गर्भकालीन परिस्थितियों को जन्म के बाद प्राप्त होने वाली व्यक्तित्व संरचना की नींव के रूप में माना जाता है। ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि गर्भकालीन दशा में मां की संवेगात्मक दशाओं जैसे–चिन्ता, भय, आवेश आदि का प्रभाव जन्मोपरान्त बच्चे पर परिलक्षित होने लगता है। मां की आयु का भी बच्चों के व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। व्यक्तित्व विकास की समग्र प्रक्रिया योग है। योग का प्रारम्भ शरीर शुद्धि से होता है और इसके निरन्तर अभ्यास से मनशुद्धि, भावशुद्धि तथा आत्मशुद्धि की प्राप्ति होती है। आज योग का प्रयोग शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रोगों की चिकित्सा के लिए भी किया जा रहा है। हम प्रायः किसी व्यक्ति को देखकर उसके सम्बन्ध में एक धारणा बना लेते हैं, उसे या तो अच्छा समझते हैं या बुरा। राम को हम अच्छा समझते है कि राम अच्छा आदमी है। श्याम को बुरा समझते हैं कि श्याम बुरा है। पर हम राम को अच्छा क्यों समझते है? और श्याम को बुरा क्यों समझते है? सम्भवतः राम को अच्छा इसलिए समझते हैं कि वह बुद्धिमान है तथा उसका आचरण अन्य व्यक्तियों के प्रति अच्छा है। श्याम को हम बुरा इसलिए समझते है कि वह मूर्ख अशिष्ट एवं दुराचारी है। इस प्रकार हम जिस व्यक्ति के अन्तर्गत अवगुण देखते है उसे बुरा और जिस व्यक्ति के अन्दर अच्छाई देखते है उसे अच्छा कहते है। अतः किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व उसके गुणों पर निर्भर करता है। प्रत्येक व्यक्ति के अंतर्गत नाना प्रकार के गुण रहते हैं और उन्हीं गुणों की प्रधानता अथवा न्यूनता के आधार पर हम किसी के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हैं। व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण सोपान सामाजिकता हैं। व्यक्ति के सामाजिक व्यक्तित्व का विकास विभिन्न प्रकार के सामाजिक संबंधों के द्वारा होता है। जब व्यक्ति सामाजिक संबंधों से अधिक महत्व ईश्वर को देता है, तब उसका व्यक्तित्व आध्यात्मिक हो जाता है, तथा उसकी रूचि आध्यात्मिक विषयों में अधिक होती है तब आध्यात्मिक व्यक्तित्व का विकास होने लगता है। व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण सोपान शुद्ध अहं का है। जब व्यक्ति अपने आत्मस्वरूप का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेता है और सभी में अपनी आत्मा का दर्शन करता है तब वह अपने व्यक्तित्व विकास के उच्च सोपान पर पहुंचता है। भारतीय दर्शन में व्यक्तित्व तीन प्रकार के बतलाये गये है। सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी। इनमें सतोगुणी व्यक्तित्व सर्वोत्तम होता है। सतोगुणी व्यक्तित्व सत् (अच्छे) गुणों से युक्त, उच्च आदर्शों, नैतिक मूल्यों तथा चरित्र से संपन्न होता है। इसके विपरीत तमोगुणी व्यक्ति कामी, क्रोधी, आलसी तथा अमानवीय गुणों से युक्त होते है। रजोगुणी

व्यक्ति में इन दोनों के मध्य की स्थिति होती है। सतोगुणी व्यक्ति आध्यात्मिक प्रवृत्ति का होता है। उसका व्यक्तित्व आत्मनःप्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् अर्थात् जो अपने प्रतिकूल हो उसका आचरण दूसरों के साथ नहीं करना चाहिए। परस्परोपग्रहो जीवानाम् अर्थात् जीवों पर दया की भावना रखना, सभी प्राणियों को अपने समान मानना, पर्यावरण संरक्षण, जीवदया, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का पालन करना आदि विशेषताएं आध्यात्मिक व्यक्तित्व में समाहित रहती है। पूर्ण मानव की कल्पना आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व से ही संभव है। आध्यात्मिक व्यक्तित्व में व्यक्ति अंतर्जगत में प्रवेश कर जाता है। यहां पहुंचने पर व्यक्ति सामाजिक होते हुए भी अकेला रहता है। बाह्य जगत् का वह उपयोग करता है किन्तु उसके प्रति ममत्व नहीं होता। ममत्व का विसर्जन ही आध्यात्मिकता है। आध्यात्मिकता से भले ही समाज का रूप परिवर्तित न हुआ हो किन्तु उससे सत्य के प्रति आस्था की सृष्टि हुई है। चरित्र और नैतिकता के प्रति आस्था आध्यात्मिकता का ही प्रतिफल है।